कबाड़नामा

अंक : 4 दिल्ली के कूड़ा चूनने वालों एवं कबाड़ियों की पत्रिका माह : जून-जुलाई 2006

चिंतन की चिंता

नूर हुसैन

चिंतन के साथी आते हैं-चिंतन के साथी आते हैं
हमें खुब समझाते हैं, चाय भी पिलाते हैं
कहते हैं हमसे मिलकर वो-कि अच्छी तरह तुम काम करो।
खुद भी जियों और दूसरों को भी सम्मान दो।
पुलिस जब कभी मारती है तो उनकों भी समझाते है।
चिंतन के साथी आते हैं-चिंतन के साथी आते हैं
बच्चों को भी ये पढाते हैं-और MCD से भी बचाते हैं
हमारी हर चिंता-चिंतन की चिंता बनती है
चिंतन के साथी आते हैं-चिंतन के साथी आते हैं।

नूर हुसैन
कोढ़ी कालोनी, नन्दनगरी

हमें भी जीने का अवसर दो

हम दिल्ली सरकार से कहते हैं, हम
क्यों झुग्गी हमारी तोड़ के तुम-
नरेला में फिकवाते हो
अपनी मेहनत की खाते थे-
तुमसे क्या माँगा था
घर बार सब तोड़ दिया-
जिंदा क्यों हमको दफनाते हो।

सुशील सरकार
कोढ़ी कालोनी, नंदनगरी

सुशील सरकार

चिंतन-हम कबाड़ियों की अपनी संस्था

मानुर मुंडुल

दो साल पहले की बात है। मैं सुभाष पैलेस (भोपुरा में) के पास कूड़ा बीन रहा था। किसी ने बगल के घर की खिड़की में पत्थर मार दिया। घरवाला बाहर आया और मुझे पकड़ लिया। बहुत बुरी तरह पिटाई की, गंदी-गंदी गालियाँ दी और कुछ ऐसा भी हुआ जो बता नहीं सकता। बहुत बेइज्जती की गई। यह घटना जब याद आती है तो आँखों में आँसू आ जाते हैं।

लेकिन चूँकि मुझे काम करना ही था इसलिए अब मार खाने, गाली सुनने की आदत हो गई है।

चिंतन से मैं 8 महीने पहले जुड़ा। काम का माहौल काफी बदल गया है। लोग चिंतनवाला कहकर मुझे बुलाते हैं तो मुझे बहुत खुशी होती है।

मानुर मुंडुल,
कोढ़ी कालोनी, नंदनगरी

नंदनगरी में बच्चों की पाठशाला

आओ मिल हम एक हो जाए....

चिंतन से मैं साल भर पहले जुड़ा। इसके साथ काम करके मुझे लगा कि यही संस्था है जो हमारे लिए कुछ करती है। जिसपर हम लोग विश्वास कर सकते हैं। संस्था से हमें पहचान मिली, झिड़की और गाली के बदले सम्मान मिलने लगा।

दीपक विश्वास

लेकिन हमें चिंता तब होती है जब हमारे कबाड़ी भाई इस बात को नहीं समझते वे अपने छोटे लाभ के लिए दूसरों को हानि पहुँचाने लगते हैं इससे हम कमजोर होंगे हमारी संस्था भी कमजोर होगी।

हम दिल्ली के अपने सभी भाईयों से निवेदन करते हैं कि वे इससे जुड़े और मजबूत बनाएँ। जिससे हम अपनी समस्याओं से छुटकारा पाकर सम्मानपूर्वक अपना रोजगार चला सके। हमें भी सम्मान मिलें यही हमारी चाहत है।

दीपक विश्वास,
कोढ़ी कालोनी, नंदनगरी

नेतृत्व पुरस्कार

20 जुलाई 2006 को हिन्दी भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में चिंतन संस्था द्वारा संस्था से जो कबाड़ी मजदूरों के बीच नेतृत्व पुरस्कार का वितरण किया गया। इस पुरस्कार हेतु के लिए साथियों का चुनाव विभिन्न क्षेत्रो से उनके काम और सांगठनिक मुद्दों पर उनके प्रयासों को ध्यान में रखते हुए किया गया। पुरस्कारो हेतु अंतिम चयन और साक्षात्कार के माध्यम से दिनांक 10 जुलाई, 2006 को आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में किया गया था।

पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ समुह का पुरस्कार रामकृष्ण पुरम के ग्रुप को दिया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती गौरी ईश्वरन (प्राधानाचार्य, संस्कृति स्कूल) के अलावा चिंतन संस्था से जुड़े 500 से अधिक कबाड़ी भाई एवं बहन उपस्थित हुए।

आप हमें निम्न पते पर अपने सुझाव एवं लेख भेज सकते हैं : चिंतन, दुसरी मंजिल, 252 सिद्वार्थ इन्कलेव, नई दिल्ली-110014 फोन : 011-26348823-24